पाठ–9

श्री कृष्ण का दूतकार्य

रामधारी सिंह दिनकर

कवि परिचय

जन्म – 1908

मृत्यु – 1974

आधुनिक युग में वीर रस से सराबोर ओजस्वी कविता के प्रमुख कवियों में दिनकर का नाम अग्रगण्य है। उनका जन्म बिहार के सिमरिया में हुआ था। उन्होंने इतिहास, दर्शनशास्त्र और राजनीति विज्ञान का अध्ययन पटना विश्वविद्यालय से किया। रामधारी सिंह 'दिनकर' उपनाम से स्वतंत्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतन्त्रता के बाद राष्ट्र कवि के नाम से जाने गये। वे छायावादोत्तर कवियों की पहली पीढ़ी के कवि थे।

एक ओर उनकी कविताओं में ओज, विद्रोह, आक्रोश, और क्रान्ति की पुकार है तो दूसरी ओर कोमल श्रृंगारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति है। इन्हीं दो प्रवृत्तियों का चरम उत्कर्ष उनकी 'कुरूक्षेत्र' और 'उर्वशी' नामक कृतियों में मिलता है। 'उर्वशी' को भारतीय ज्ञानपीठ तथा 'कुरूक्षेत्र' को विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ काव्यों में 74 वाँ स्थान दिया गया। वे 1952 में भारतीय संसद के सदस्य भी रहे हैं। भारत सरकार ने पद्म भूषण से उन्हें विभूषित किया है।

कृतियाँ

हुँकार, रसवंती, सामधेनी, कुरूक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा, कोमला और कवित्व (काव्य)

राष्ट्र भाषा और राष्ट्रीय एकता, भारत की सांस्कृतिक एकता, संस्कृति के चार अध्याय, शुद्ध कविता की खोज (गद्य)

पाठ परिचय –

सकंलित काव्यांश दिनकरजी के प्रबन्धकाव्य 'रश्मिरथी' से उद्धृत है। इसके माध्यम से कवि ने मानवीय क्षमताओं और साहस के साथ–साथ संघर्षों का जीवन निर्माण में महत्त्व रेखांकित किया है । कवि ने सामयिक सन्दर्भों में भी महाभारत के कथानक को प्रासंगिक बनाने की सूत्रात्मक अभिव्यक्ति की है। कवि ने मानव के आत्मबल से अपने नैसर्गिक गुणों को तराशने का आह्वान किया है। विपत्तियों एवं असुविधाओं में भी हिम्मत रखकर कर्म करने पर ही सफलता और समृद्धि के अनेक उदाहरण प्रस्तुत कर कर्म का सन्देश दिया है।

श्री कृष्ण का दूतकार्य

है कौन! विघ्न ऐसा जग में, टिक सके आदमी के मग में,
खम ठोक ठेलता है जब नर, पर्वत के जाते पाँव उखड़ ।
मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है ।
गुण बड़े एक से एक प्रखर, हैं छिपे मानवों के भीतर,
मेंहदी में जैसे लाली हो, वर्तिका बीच उजियाली हो ।
बत्ती जो नहीं जलाता है,
रोशनी नहीं वह पाता है ।
पीसा जाता जब इक्षु–दण्ड, झरती रस की धारा अखंड,
मेंहदी जब सहती है प्रहार, बनती ललनाओं का सिंगार ।
जब फूल पिरोये जाते हैं,
हम उनको गले लगाते हैं ।
कंकड़ियाँ जिनकी सेज सुघर, छाया देता केवल अंबर,
विपदाएँ दूध पिलाती हैं, लोरी आँधियाँ सुनाती हैं ।
जो लाक्षा–गृह में जलते हैं,
वे ही सूरमा निकलते हैं ।
वर्षों तक वन में घूम–घूम, बाधा विघ्नों को चूम चूम,
सह धूप घाम, पानी पत्थर, पांडव आये कुछ और निखर ।
सौभाग्य न सब दिन सोता है,
देखें आगे क्या होता है।
मैत्री की राह बताने को, सबको सुमार्ग पर लाने को,
दुर्योधन को समझाने को, भीषण विध्वंस बचाने को ।
भगवान हस्तिनापुर आये,
पांडव का संदेशा लाये ।
दो न्याय अगर तो आधा दो, पर इसमें भी यदि बाधा हो,
तो दे दो केवल पाँच ग्राम, रक्खो अपनी धरती तमाम ।।
हम वही खुशी से खायेंगे,
परिजन पर असि न उठायेंगे।
दुर्योधन वह भी दे न सका, आशिष समाज की ले न सका,
उलटे, हरि को बाँधने चला, जो था असाध्य, साधने चला।
जब नाश मनुज पर छाता है,
पहले विवेक मर जाता है।

हरि ने भीषण हुँकार किया, अपना स्वरूप–विस्तार किया,
डगमग–डगमग दिग्गज डोले, भगवान कुपित होकर बोले ।
''जंजीर बढ़ाकर साध मुझे,
हाँ–हाँ, दुर्योधन ! बाँध मुझे।''
यह देख गगन मुझ में लय है, यह देख पवन मुझमें लय है,
मुझ में विलीन झंकार सकल, मुझमें लय है संसार सकल ।
सब जन्म मुझी से पाते हैं –
फिर लौट मुझी में आते हैं ।
हित–वचन नहीं तूने माना, मैत्री का मूल्य न पहचाना,
तो ले, मैं भी अब जाता हूँ, अन्तिम संकल्प सुनाता हूँ।
याचना नहीं अब रण होगा,
जीवन, जय, या कि मरण होगा।
टकरायेंगे नक्षत्र–निकर, बरसेगी भू पर वह्नि प्रखर,
फण शेषनाग का डोलेगा, विकराल काल मुँह खोलेगा।
''दुर्योधन रण ऐसा होगा,
फिर कभी नहीं जैसा होगा ।''
भाई पर भाई टूटेंगे, विषबाण बूंद से छूटेंगे,
वायस शृगाल सुख लूटेंगे, सौभाग्य मनुज के फूटेंगे ।
''आखिर तू भू–शायी होगा,
हिंसा का परदायी होगा।''
थी सभा सन्न, सब लोग डरे, चुप थे या थे बेहोश पड़े,
केवल दो नर न अघाते थे, धृतराष्ट्र विदुर सुख पाते थे ।
''कर जोड़ खड़े प्रमुदित, निर्भय,
दोनों पुकारते थे जय–जय ।

शब्दार्थ

खम– बाहुबल, शारीरिक शक्ति
ठेलता– धक्का देकर आगे बढ़ना
प्रखर– तेज
विघ्न– बाधा,
वर्तिका– दीपक की बाती
इक्षु दण्ड– गन्ने का टुकड़ा
कुपित– क्रोधित
जंजीर– लोहे की चेन
हित वचन– भला चाहने की बात
हुंकार– तेज स्वर
याचना– भीख/माँग
रण– युद्ध

सुघर– निपुण, कुशल	निकर– समूह
विपदाएँ– मुसीबतें	वह्नि– अग्नि
लाक्षा–गृह– लाख का घर	असाध्य– जिसे साधा न जा सके
विकराल – भयंकर, डरावना	सूरमा– वीर
वायस– कौवा	घाम– धूप(गर्मी)
श्रृगाल– सियार	विध्वंस – विनाश
भीषण – भयानक	परदायी – जिम्मेदार
परिजन – परिवारजन	प्रमुदित – प्रसन्न
असि– तलवार	निर्भय– भय रहित
भू–शायी – पृथ्वी पर गिरा हुआ, मृतक	

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भगवान कृष्ण पाण्डवों का सन्देश लेकर कहाँ गए थे ?
   - (क) कुरूक्षेत्र (ख) हस्तिनापुर
   - (ग) इन्द्रप्रस्थ (घ) मथुरा
2. संकलित काव्यांश कवि के किस प्रबन्ध काव्य से लिया गया है ?
   - (क) हुँकार (ख) परशुराम की प्रतीक्षा
   - (ग) रश्मिरथी (घ) कुरूक्षेत्र

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. 'केवल दो नर न अघाते थे' पंक्ति के आधार पर उन दोनों महापुरुषों के नाम लिखिए।
4. हस्तिनापुर जाकर कृष्ण ने दुर्योधन को पाण्डवों का क्या सन्देश दिया ?
5. भगवान कृष्ण ने कुपित होकर दुर्योधन से क्या कहा ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. ''थी, सभा सन्न, सब लोग डरे .... पुकारते थे जय जय।''
   इस परिस्थिति का अपने शब्दों में वर्णन कीजिये ।
7. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ स्पष्ट करते हुए सार्थक वाक्य बनाइये :–
   प्रखर, अम्बर, असाध्य, विवेक, संकल्प ।
8. ''वर्षों तक वन में घूम–घूम .... होता है ।''
   अ. पाण्डवों को वर्षो तक वन में क्यों घूमना पड़ा ?
   ब. उनके सौभाग्य का कब और कैसे उदय हुआ ?

9. ''उल्टे, हरि को बांधने चला .... चला । ''

अ. दुर्योधन कृष्ण को क्यों बाँधने चला ?

ब. यहाँ कृष्ण को असाध्य क्यों कहा गया ?

10. ''जो लाक्षा–गृह में जलते है वे ही सूरमा निकलते है।'' के तात्पर्य को कथा–प्रसंग बताते हुए समझाइये।

निबन्धात्मक प्रश्न

10. निम्नलिखित की प्रसंगपूर्वक व्याख्या कीजिये –

(i) है कौन ! विघ्न ऐसा जग में .... पानी बन जाता है ।

(ii) पीसा जाता जब इक्षु–दण्ड .... हम उनको गले लगाते हैं ।

(iii) हित वचन नहीं तूने माना...........................हिंसा का परदायी होगा।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. ख
2. ग